पुराणों में वर्णित महर्षि अत्रि एवं अनसूया

डॉ. सपना चन्देल
यू.जी.सी–पी.डी.एफ., संस्कृत.विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

संस्कृत वाङ्मय में पुराणों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्राचीन भारतवर्ष का ज्ञान–विज्ञान, इतिहास, भूगोल, वंश परम्परा इत्यादि का वर्णन पुराणों में उपलब्ध होता है। उसी प्रकार महर्षि अत्रि एवं उनकी पतिव्रता, विश्ववन्दनीय, पूजनीय पत्नी अनसूया का वर्णन भी विभिन्न पुराणों में उपलब्ध होता है। कुछ पुराणों में महर्षि अत्रि व अनसूया का वर्णन विस्तार से उपलब्ध होता है और कुछ पुराणों में दिशा निर्देश मात्र उपलब्ध होता है। जिनका वर्णन इस प्रकार से वर्णित है।

ब्रह्म पुराण के प्रथम अध्याय में सप्तऋषियों का वर्णन मिलता है। जिनमें अनसूया के पति महर्षि अत्रि का वर्णन है कि प्रजापतियों की सृष्टि की इच्छा रखकर मरीचि अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ–इन सात ऋषियों की ब्रह्मा ने मानसी सृष्टि की।[1] इसी पुराण के नवम अध्याय में चन्द्रमा महर्षि अत्रि के पुत्र थे, ऐसा वर्णन वर्णित है।[2] ब्रह्मपुराण में अत्रि मुनि द्वारा पुत्रों की प्राप्ति का वर्णन प्राप्त होता है कि अत्रि ने ब्रह्म, विष्णु और महेश्वर की आराधना की। इन त्रिदेवों के प्रसन्न होने पर महर्षि अत्रि ने उनसे कहा कि आप लोग मेरे पुत्र होइये और मुझे एक रूपवती कन्या भी हो। निदान स्वरूप ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर उनके पुत्र हुए।[3]

पद्म पुराण के अनुसार पुरातन समय में जब इस संसार में सर्ग की रचना का आरम्भ हुआ था तब सबसे पहले ब्रह्म जी ने अत्रि मुनि को सृजन करने की आज्ञा प्रदान की थी।[4]

विष्णु पुराण में महर्षि अत्रि व अनसूया के पति–पत्नी होने का वर्णन मिलता है कि प्रजापति ने भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, मरीचि, दक्ष, अत्रि और वशिष्ठ इन अपने ही सदृश मानस पुत्रों की सृष्टि की।[5] फिर ख्याति, भूति, सम्भूति, क्षमा, प्रीति, सन्नति, ऊर्जा, अनसूया तथा प्रसूति इन नौ कन्याओं को उत्पन्न कर, इन्हें उन महात्माओं को तुम इनकी पत्नी को ऐसा कहकर सौंप दिया।[6] इसी पुराण में दत्तात्रेय, दुर्वासा और सोम अत्रि के साक्षात् पुत्र बताये गए हैं।[7]

शिव पुराण में इस प्रकार का उल्लेख मिलता है कि परम् तपस्वी, पूर्ण ब्रह्मा के ज्ञाता, महामनीषी विधाता के अत्यन्त आदेश पालक और अनसूया के पति अत्रि मुनि ब्रह्मा जी के पुत्र थे। अपने पिता की आज्ञा मानकर पुत्र–प्राप्ति की इच्छा से अत्रि अपनी पत्नी अनसूया के साथ ऋक्ष नामक गिरि पर तपश्चर्या करने के लिए चले गये। विन्ध्य गिरि के निकट नदी तट पर अत्रि मुनि ने सविधि अपने प्राणों को रोककर निश्चिन्त रूप से सौ वर्ष तक

महाघोर तपस्या की। उस समय अत्रि ने अपने हृदय में ऐसा ठान लिया था कि जो भी कोई अधिकारी एकमात्र परमेश्वर महाप्रभु हैं। वे मुझे अवश्य ही श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने का वरदान देंगे। इस तरह अत्यन्त कठिन तपस्या करते हुए जब अधिक समय व्यतीत हो गया तो उनके मस्तक में बहुत ही तीक्ष्ण पवित्र अग्नि की ज्वाला प्रकट हुई। उस समय ज्वाला का ऐसा, तीव्रतम तेज था कि समस्त इन्द्रादि देवगण, मुनिमण्डल, ऋषि, समूह और लोक भस्म होकर पीड़ित होने लगे। उस समय इन्द्रादि देववृन्द और मुनि आदि सभी उस अग्नि से संतप्त होकर शीघ्र ही ब्रह्मा जी के निवास स्थान पर गये। वहाँ पहुँचकर सबने प्रणामपूर्वक स्तवन कर ब्रह्मा जी से अपने दुःख का वृत्तान्त बताया, तब ब्रह्मा भी उन सबको लेकर विष्णु लोक को गये। वहाँ पहुँचकर सब देवों के सहित विष्णु को बार–बार प्रणाम करते हुए उनसे अपने दुःख की प्रार्थना की। इसके अनन्तर इन सबको अपने साथ लेकर भगवान् विष्णु शिव के समीप गए। वहाँ महेश्वर को प्रणाम करके सभी लोग भगवान् शङ्कर की स्तुति करने लगे। अधिक समय तक स्तुति करने के पश्चात् व्यापक शिव से अत्रि के तप द्वारा उत्पन्न अग्नि के तेज से होने वाले अपने दुःख का निवदेन किया। उस समय वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों ने परस्पर मिलकर समस्त लोगों के कल्याण के लिये परामर्श करना आरम्भ कर दिया। खूब सोच–विचार कर ब्रह्मादि तीनों देवता अत्रि ऋषि को वरदान देने के लिये शीघ्रता से ऋषि अत्रि के आश्रम में गये। वहाँ उस समय अत्रि ने इन तीनों को अपने–अपने विशेष चिह्नों से अंकित देखकर सबको परम प्रिय वाणी द्वारा सादर प्रणाम किया और स्तुति करने लगे। तदनन्तर परम विनीत ब्रह्मा के आत्मज अत्रि विस्मित होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन देवों से हाथ जोड़कर कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! हे विष्णो! हे महेश्वर! आप लोग इस समस्त विश्व के परम पूज्य माने जाते हैं और इस जगत् के आप प्रभु ईश्वर तथा सृजन, पोषण और विनाश करने वाले हैं। मैंने तो अपने पुत्र की प्राप्ति के लिए केवल शिव का ही स्त्री के सहित तप में ध्यान स्मरण किया था क्योंकि शंकर संसार में ईश्वर विख्यात हैं। हे वरदाताओं में श्रेष्ठ! अब आप तीनों ही देवता यहाँ किस कारण से आये हैं? पहले मेरी संशया को मिटाकर फिर वरदान देने की कृपा करें। अत्रि के इन वचनों को सुनकर इसका उत्तर उन तीनों देवों ने यह दिया कि हे अत्रि मुनि! तुमने जो भी हृदय में संकल्प किया है, वह उसी तरह से पूर्ण होगा। तीनों देवों ने कहा– हम तीनों ब्रह्मा, विष्णु और महेश समान वर देने वाले हैं। इसलिए हमारे अंशों से जन्म ग्रहण करने वाले तुम्हारे एक नहीं तीन पुत्र होंगे। वे तीनों पुत्र ऐसे होंगे जो अपने माता–पिता की कीर्ति की वृद्धि करेंगे इतना कहकर वे तीनों देव प्रसन्नतापूर्वक अपने–अपने निवास स्थान को चले गये।

इसके उपरान्त अत्रि मुनि जी इच्छित वर पाकर अनसूया सहित प्रसन्नचित्त अपने स्थान को चले गये और ब्रह्मानन्द को पाने लगे। इसके पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश अत्रि की

पत्नी अनसूया के उदर से पुत्र के परम प्रसन्न तथा विविध लीलाओं के रचने वाले उत्पन्न हुए। अनसूया के गर्भ से अत्रि के द्वारा ब्रह्माजी के अंश से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ जो कि देवों के द्वारा फैंके जाने पर फिर समुद्र में प्रकट हुआ था। भगवान् विष्णु के अंश से अनसूया में अत्रि के द्वारा दत्तात्रेय भगवान् शंकर के अंश से अनसूया की कुक्षि से धर्म के श्रेष्ठ प्रर्वत्तक दुर्वासा उत्पन्न हुए हैं। भगवान् ने ब्रह्मतेज की वृद्धि करने वाले दुर्वासा के स्वरूप से समुत्पन्न होकर दयालुता के साथ बहुतों की धर्मनिष्ठा की जाँच की थी।[8]

श्रीमद्भागवत पुराण में इस प्रकार का उल्लेख वर्णित है कि अनसूया कर्दम जी की पुत्री थी। कर्दम जी की नौ पुत्रियाँ थीं। वे ब्रह्मर्षियों की पत्नियाँ हुई [9] उनमें से प्रसूति के जो सन्तान हुई उनका वृत्तान्त इस प्रकार से है। मरीची की पत्नी कर्दम की कन्या कला ने कश्यप व पूर्णिमा दो पुत्र उत्पन्न किये। उन दोनों के वंश से यह संसार परिपूर्ण हो गया। पूर्णिमा के दो पुत्र उत्पन्न हुए, विरज व विश्वग। इनके अतिरिक्त देवकुल्या नाम एक पुत्री उत्पन्न हुई, जो नारायण के चरण नित्यप्रति प्रेम से धोती थी और उन्हीं के प्रताप से जन्मान्तर में आकाश गंगा अर्थात् सुरसरिता हुई। अत्रि मुनि की पत्नी अनसूया के सुन्दर यशकर्त्ता तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंश से सोम, दत्तात्रेय, दुर्वासा, ये तीनों महातेजस्वी हुए। अत्रि के जीवन में देवताओं में श्रेष्ठ उत्पत्ति, पालन और संहारकर्त्ता इन तीनों ने जन्म इस कारण से लिया– अत्रि ऋषि को ब्रह्मवेताओं में श्रेष्ठ समझकर ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचने के लिये प्रेरणा की, उस समय अत्रि ऋषि अपनी भार्या अनसूया को संग ले कुलाचल पर्वत पर ऋक्ष नामक तीर्थ में जाकर तप करने लगे। जहाँ पुष्पों क गुच्छे, अशोक व पलाश के वृक्षों में लाल–लाल लटक रहे हैं। उसकी अद्भुत शोभा व निर्विन्ध्या नदी के चारों ओर झरनों के जल का शब्द हो रहा है। उस मनोहर स्थान में सुख–दुःख को समान समझकर प्राणायाम से चित्त को रोककर सौ वर्ष तक एक पाँव से खड़े हो, पवन को भक्ष्य बना तप करने लगे और इस प्रकार वे बारम्बार चिन्तन करते थे कि हे जगदीश्वर! जगत् का जो स्वामी है, मैं उसकी शरणागत हूँ, वह जैसे आप है इसी प्रकार की सन्तान मुझे दें। प्राणायम की बढ़ी हुई अग्नि जो ऋषिश्वर के शीश में प्रकट हुई उससे त्रिभुवन तपने लगा। उस समय तीनों देवता अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश अत्रि मुनि के स्थान पर गये, जाकर देखा तो अप्सरा, मुनि, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर नाग ये सब देवता अत्रि मुनि के यश का गान कर रहे हैं। इन देवताओं के प्रकट होने से मुनि का मन चकित हो गया, परन्तु फिर भी एक पाँव से खड़े होकर मुनि ने श्रेष्ठ देवताओं के दर्शन किये और पुष्पादिक अञ्जलि में लेकर, प्रसन्न मन से दण्डवत् प्रणाम कर, वृष, हंस और गरूड़ पर बैठे और अपने–अपने त्रिशूल कमण्डलु, चक्र इन चिह्नों से चिन्हित तीनों देवताओं का पूजन किया। अनुग्रह की दृष्टि एवं मुस्काते मुख से प्रसन्न जानकर और उनकी शोभित कांति जानकर अपने मिचे हुए नेत्रों को मल, दोनों हाथ जोड़कर, उनमें ही

अपने मन को लगाकर कोमल, मधुर, मनोहर वाणी से त्रिलोकीनाथों की स्तुति कर अत्रि मुनि बोले कि युग–युग में सृष्टि, उत्पत्ति, पालन व संहार करने के लिए विभाग किये हुए माया के गुणों से जिन्होंने देह धारण किये हैं, ऐसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आप तीनों को मैं बारम्बार प्रणाम कहता हूँ। उन तीनों में से आप कौन हैं? मैंने तो एक को बुलाया था। इस बात पर आप मुझे कहिये। मैंने यहाँ विविध–विधान व अनेक प्रकार के उपचार करके संतान के लिए केवल एक भगवान् का ध्यान किया था। आप तीनों देव कृपा करके यहाँ कैसे आये? क्योंकि आप शरीरधारियों के मन से भी दूर हो अर्थात् मन से कहीं आ सकते ऐसे आप मेरे पर प्रसन्न हुए यह बड़ा आश्चर्य है। अत्रि मुनिश्वर के वचन सुनकर वे त्रिदेव कोमल वाणी से हंसकर इस प्रकार कहने लगे हे ब्रह्मन्! जैसा संकल्प आपने किया, उसी प्रकार हम आयें, इसमें किंचिन्मात्र भी अंतर नहीं हुआ, आपने हम सबका ही ध्यान किया हैं। हे मुने! इसलिए हम तीनों के अंश से जगत विख्यात आपके तीन पुत्र होंगे और अब संसार में आपके यश का विस्तार करेंगे, उसी से आपका कल्याण होगा। इस प्रकार वे तीनों सुरेश्वर मनोवांछित वर देकर और मुनि से आदर पाकर उन दोनों स्त्री–पुरुषों के सम्मुख से अपने–अपने स्थान को गये। कुछ कालोपरान्त ब्रह्मा के अंश से सोम सुत हुआ, विष्णु के अंश से योगवेत्ता दत्तात्रेय जी प्रकट हुए और शिव के अंश से महाऋषि दुर्वासा उत्पन्न हुए।[10]

मार्कण्डेय पुराण में माता अनसूया द्वारा कुशिकवंशोत्पन्न ब्राह्मण को शाप मुक्त करना तथा वरलाभ में चन्द्र, दत्तात्रेय और दुर्वासा की उत्पत्ति होने का वर्णन वर्णित है जो इस प्रकार से है कि पहले प्रतिष्ठानगर में कुशिकवंशोत्पन्न कोई ब्राह्मण वास करता था। वह पूर्वजन्म के किये पाप द्वारा कुष्ठ रोग से आतुर हुआ। स्वामी के कुष्ठ रोग से आक्रान्त होने पर भी भार्या देवता के समान उसकी पूजा करती। चरणों में तेल मलती, अंग दबाती, स्नान कराती, आच्छादन करती, भोजन कराती और कफ, मूत्र, मल तथा रक्त का प्रवाह धोती। निर्जन में उपकार और प्रियसंभाषणादि द्वारा विनितभाव से सदा उसकी पूजा करती। किन्तु ब्राह्मण अत्यन्त कोपन स्वभाव और निष्ठुर होने के कारण विनीत पत्नी से पूजित होकर भी उसको सदा घुड़कता, तथापि वह प्रणत भार्या उसको देवता जानती। वह उस बीभत्सरूपी ब्राह्मण को सबसे श्रेष्ठ मानती। ब्राह्मण में चलने की शक्ति नहीं थी, तो भी एक समय पत्नी को आज्ञा दी कि मैंने उस वैश्या को देखा है जो राजमार्ग के पार्श्ववर्ती घर में वास करती है। तू मुझे उसी वेश्या के घर ले चल। हे धर्म को जानने वाली! वही मेरे हृदय में वर्तमान रहती है, मैंने प्रातःकाल में उस बाला को देखा है और अब रात्रि हो गई है। तथापि जब से देखा तब से वह मेरे हृदय से अलग नहीं होती, यदि वह पुष्टश्रोणि भागवाली, पुष्टपयोधरवाली, तन्वङ्गी, सर्वाङ्गसुन्दरी बालिका मुझको आंलिङ्गन नहीं करेगी, तो निःसन्देह मेरा मरण देखोगी, क्योंकि एक तो कामदेव मनुष्य के प्रतिकूल हैं।

जिस प्रकार अनेक मनुष्य उसके प्रार्थी हैं, फिर मुझ में चलने की शक्ति नहीं इस कारण मुझे विषम संकट बोध होता है। उस समय कामातुर स्वामी के इस प्रकार वचन सुनकर सत्कुलोत्पन्न महाभागा पतिव्रता व्याकुल हुई। पत्नी ने दृढ़ रूप से कमर बाँध बहुत धन ग्रहण किया और स्वामी को कंधे पर चढ़ाकर धीरे–धीरे गमन करने लगी। एक तो रात्रि ही अंधियारी थी, फिर आकाश में मेघ आच्छादित थे, किन्तु वह स्वामी के प्रिय कार्य की अभिलाषा करने वाली द्विजाङ्गना चंचल बिजली का प्रकाश देखकर राजमार्ग में गमन करने लगी और उसी मार्ग में एक शूली गड़ रही थी जिस पर चोर न होकर भी चोरी के अपराध से मांडण्य मुनि बड़े दुखी होते थे, मार्ग में अंधकार होने से हठात् उस पत्नी के कंधे पर चढ़े हुए कौशिक ब्राह्मण के अंग स्पर्श से उनका चरण विचलित हुआ। पैर के विचलित होने से मांडण्य मुनि ने अत्यन्त क्रोधित होकर कहा कि जिस पुरुष ने पैर विचलित करके मुझे वृथा यंत्रणा दी है, सूर्योदय होते ही वह पापात्मा नराधम असह्य यंत्रणा भोगने से अवश होकर निःसंदेह प्राण त्याग करेगा। सूर्य के देखते ही निःसन्देह वह प्राण त्याग देगा। तब उसकी पत्नी ने उनका यह दारूण शाप सुन अत्यन्त व्यथित होकर कहा ''सूर्य अब उदित नहीं होंगे।'' अनन्तर पतिपरायणा ब्राह्मण स्त्री के उसी वचनानुसार सूर्यदेव के उदित न होने से सदा रात्रि ही रही। इस प्रकार बहुत रात्रियों के बीतने पर देवताओं को अत्यन्त भय प्राप्त हुआ तब वह विचारने लगे कि, ''जब स्वाध्याय, वष्ट्कार, स्वधा और स्वाहा लोप होगा।'' तब किस प्रकार के इस सम्पूर्ण जगत् की रक्षा होगी। अहोरात्र की व्यवस्था के बिना मास और ऋतु का विभाग नहीं होगा, जिससे उत्तरायण और दक्षिणायन का ज्ञान नहीं होगा। अयनज्ञान न होने से किस प्रकार संवत्सर की स्थिरता होगी? संवत्सर का ज्ञान न होने से अन्याय काल का ज्ञान किस प्रकार से होगा? पतिव्रता के वचनानुसार सूर्य अब उदित नहीं होते। सूर्योदय नहीं होने से स्नानदानादि कार्य सभी बन्द हुए, अब अग्निचयन अर्थात् हवन भी नहीं होता और समस्त यज्ञों का अभाव दीखता है, काल के बिना इष्टि नहीं होती, यज्ञदानादि क्रिया नहीं होती, चराचर अंधकार से व्याप्त होने के कारण सब प्राणी नष्ट होते हैं। यज्ञ विनाश की शंका करने वाले सब देवताओं के इस प्रकार वचन सुनकर देवताओं में श्रेष्ठ प्रजापति ब्रह्मा जी ने कहा– हे अमरगण! देखो, तेज से तेज और तप से तप का विनाश होता है, अतएव मेरा वचन सुनो, देखो–पतिव्रता के माहात्म्य से सूर्य उदय नहीं होते हैं। सूर्य के उदय न होने से तुम्हारी और मनुष्यों की अत्यन्त हानि होती है, इस कारण तुम यदि सूर्योदय होने की अभिलाषा करते हो तो एकमात्र पतिव्रता तपस्विनी अत्रिमुनि की पत्नी अनसूया को सूर्य के उदय की कामना से प्रसन्न करो। तब देवताओं ने जाकर उसको प्रसन्न किया, तब वह इनके द्वारा प्रसन्न होकर बोली कि तुम अभिलाषित विषय की प्रार्थना करो। देवताओं ने यह प्रार्थना की कि पहले के समान दिन हो अर्थात् सूर्य निकले'' अनसूया ने कहा पतिव्रता की महिमा कभी

हीन होने वाली नहीं हैं। हे देवताओं में श्रेष्ठ! उस पतिव्रता का वैसा सम्मान करके भेजूँगी, जिस प्रकार दिन रात की स्थिति हो जाय और जिस प्रकार से उसका वह पति शाप के कारण नाश को प्राप्त न हो, सो करूँगी। अनसूया देवताओं से इस प्रकार कहकर मन्दिर उस पतिव्रता ब्राह्मण भार्या से मिलने गई। माता अनसूया ने उसे सूर्योदय न होने के विपरीत प्रणाम बताए। इस पर ब्राह्मणी ने कहा–हे महाभागे! मांडण्यमुनि ने अत्यन्त क्रोधित होकर मेरे भर्त्ता को इस प्रकार शाप दिया है कि ''सूर्य उदय होते ही तेरा पति मर जाएगा। अनसूया बोली–हे कल्याणी! यदि तुम्हारी अभिलाषा हो तो मैं तुम्हारे स्वामी की देह पूर्ववत् करूँगी। हे वरवर्णिनी! पतिव्रता स्त्री की महिमा सम्यक् प्रकार मुझको आराधनीय है अतएव मैं तुम्हारा सम्मान करूँगी। ब्राह्मणी के 'तथास्तु'' कहने पर तपस्विनी अनसूया ने अर्ध्य उद्यत करके जब सूर्यदेव का आवाहन किया, तब दश दिन क्रमागत रात्रि थी। अनन्तर प्रफुल्ल कमल के समान लालवर्ण उरूमण्डल भगवान् विवस्वान् ने जैसे ही उदयाचल में आरोहण किया। इसी बीच उसके भर्ता ब्राह्मण का प्राण नष्ट हुआ और वह जैसे ही पृथ्वी में गिरा, द्विज रमणी ने उसी समय उसको पकड़ लिया। अनसूया बोली हे भद्रे! तुम विषाद मत करो, मैंने केवल मात्र पति की सेवा से जो तपोबल प्राप्त किया है, वह तुम्हें अभी दिखाई देगा। रूप, शील, बुद्धि, वाक्य और मधुरता आदि सद्गुणों के द्वारा कभी किसी पुरुष को यदि स्वामी के समान नहीं जानती हूँ तो उसी सत्य के बल से यह ब्राह्मण व्याधि मुक्त और युवा हो, फिर जीवन प्राप्त कर पत्नी के सहित सौ वर्ष जीवित रहे। मैं यदि अन्य देवता को स्वामी के समान नही जानती हूँ, तो इसी सत्य से यह ब्राह्मण रोग रहित होकर जीवित रहे और काय, मन, वचन से स्वामी की आराधना में यदि नित्य मेरी बुद्धि उद्यम है, तो यह द्विजवर जीवित हो। इसके बाद वह ब्राह्मण व्याधि से छूटकर युवा कलेवर हो, अजर, अमर के समानदेह की प्रभा के घर को प्रकाशमान करता हुआ उठ खड़ा हुआ और पुष्पवृष्टि तथा देवताओं के बाजों की ध्वनि होने लगी, फिर देवताओं से अत्यन्त प्रसन्न होकर अनसूया ने कहा– हे कल्याणी! तुमने देवताओं का बडा कार्य सम्पादित किया है। अतएव वर ग्रहण करो। अनसूया बोली हे पितामह इत्यादि देतवाओं! आप यदि मेरे प्रति प्रसन्न होकर वर देने की अभिलाषी हुए हैं और मुझे वर देने योग्य विचार है, तो यह वर दो– जिससे ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर मेरे पुत्र रूप में जन्म ग्रहण करें और मैं स्वामी के सहित क्लेश के मुक्ति निमित्त योग को प्राप्त हूँ। तब ब्रह्मा, विष्णु महेश्वरादि देवता 'तथास्तु' कहकर उस तपस्विनी का यथाविध सम्मान करके चले गए। इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों ने अनसूया के पुत्र के रूप में जन्म ग्रहण किया। ब्रह्मा ने चन्द्ररूप में, विष्णु ने दत्तात्रेय रूप में और महादेव ने दुर्वासा रूप में देवताओं के वरदान से जन्म ग्रहण किया।[11]

अग्नि पुराण में महर्षि अत्रि व उनकी पत्नी अनसूया का वर्णन इस प्रकार से मिलता है कि राम अत्रि मुनि व उनकी पत्नी अनसूया, शरभङग, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य के भ्राता और अगस्त्य मुनि को नमस्कार करके उनकी कृपा से तलवार और धनुष प्राप्त करके दण्डकारण्य पहुँचे।[12] अग्नि पुराण में भी चन्द्रमा को अत्रि पुत्र ही माना गया है।[13]

भविष्य पुराण में भी अत्रि ऋषि का वर्णन मात्र मिलता है।[14]

ब्रह्मवैवर्त पुराण में अत्रि मुनि का भगवान् शिव के वामनेत्र से स्वयं उत्पन्न[15] होने का वर्णन मिलता है। इसी पुराण में अत्रि ऋषि को ब्रह्म पुत्र माना गया जिसका वर्णन इस प्रकार वर्णित है कि तीन गुणों वाली प्रकृति में तीन विष्णाव प्रवृत होता है। उन दोनों की समान रूप से जिसकी भक्ति थी इसी कारण यह बालक अत्रि इस नाम से कहा गया था।[16]

लिङ्ग पुराण में महर्षि अत्रि व अनसूया के पति–पत्नी होने के प्रमाण मिलते हैं। इस पुराण में अनसूया प्रजापति दक्ष तथा प्रसूति की चौबीस कन्याओ में से एक है। जिनका क्रम इस प्रकार से है श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, सिद्धि, कीर्ति, महातपा, ख्याति, शान्ति, समूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनसूया, स्वाहा, सुरारणि और महाभागा। इन सबका यथाक्रम सुयोग्य वरों को दान कर दिया था।[17] श्रद्धा से लेकर कीर्ति पर्यन्त परम् दुर्लभ जो अच्छी पुत्रियाँ थी। उन्होंने प्रजापति धर्म को अपना पति प्राप्त किया था।[18] धीमान् भृगु ने ख्याति के साथ विवाह किया था। मरीचि ने भार्गवरणि और सम्भूति को अपनी पत्नियाँ बनाया था। अङ्गिरा मुनि ने स्मृति का पाणिग्रहण किया था। पुण्यात्मा पुलस्त्य ने प्रीति के साथ और पुलह मुनि ने क्षमा के साथ विवाह किया था। क्रतु नामक महामुनि ने सन्तति को पत्नी बनाया था और परम् मनीषि अत्रि मुनि ने अनसूया का पाणिग्रहण किया था। भगवान् वसिष्ठ ने ऊर्जा के साथ विवाह किया था। वह ऊर्जा पद्मा दल के समान सुन्दर नेत्रों वाली थी। जिसको परम् वरिष्ठ वसिष्ठ ने अपनी पत्नी बनाया। विभावजु अग्निेदव ने स्वाहा के साथ और पितृगण ने स्वधा के साथ विवाह किया। सती तो शिव सम्भवा मानसी पुत्री थी। दक्ष ने जगत् की धात्री जगद्म्बा का विवाह रूद्र से किया।[19] इस पुराण में अत्रि महामुनि की पत्नी अनसूया ने छः सन्ततियों को उत्पन्न किया था। उनमें एक कन्या थी जिसका नाम श्रुति था और पाँच पुत्र थे। पुत्रों के नाम इस प्रकार से थे–सत्यनेत्र, मुनिर्भव्य, मुर्तिराय, शनैश्चर और सोम। इनमें श्रुति सबसे छोटी थी। ऐसे ये पाँच आत्रेय पुत्र हुये थे।[20] इस पुराण में 'भगवान् शिव से समस्त सृष्टि का विस्तार' नामक वर्णन में अत्रि और अनसूया के पाणिग्रहण का पता चलता है कि अत्रि को अनसूया का दान किया गया था।[21]

वराह पुराण में अत्रि मुनि और सोम का उनके पुत्र के रूप में वर्णन मिलता है। जो प्रजापति दक्ष का जमाता था।[22]

स्कन्द पुराण के 'दक्षयज्ञ' वर्णन में महर्षि अत्रि की उपस्थिति का पता चलता है।[23]

वामन पुराण में महर्षि अत्रि अपनी पत्नी अनसूया के साथ दक्ष के यज्ञ में आमन्त्रित थे ऐसा वर्णन उपलब्ध होता है।[24]

कूर्म पुराण में महर्षि अत्रि व अनसूया का पति–पत्नी होने का प्रणाम मिलता है।[25]

मत्स्य पुराण में महर्षि अत्रि का वर्णन इस प्रकार मिलता है कि ब्रह्मा जी की मानस सृष्टि में सबसे पहले मरीचि उत्पन्न हुए और इसके पश्चात् भगवान् अत्रि ऋषि की उत्पत्ति हुई थीं, फिर इसके पश्चात् अङ्रिस ऋषि और पुलस्त्य ऋषि का उद्भव हुआ था।[26]

गरुड़ पुराण में भी महर्षि अत्रि व अनसूया पति–पत्नी के ही रूप में वर्णित हैं ।[27]

ब्रह्माण्ड पुराण में ऐसा वर्णन उदधृत है कि उत्तानपाद अत्रि के दत्तक पुत्र थे जो मनु द्वारा उन्हें दे दिये गये।[28] ब्रह्माण्ड पुराण में महर्षि अत्रि की पत्नी अनसूया के सौन्दर्य और उसके पातिव्रत्य होने का भी वर्णन है।[29] इस पुराण में अनसूया व महर्षि अत्रि के पाँच पुत्रों का वर्णन मिलता है। जो इस प्रकार से है– सत्यनेत्र, हव्य, आपामूर्ति, शनैश्चा और सोम।[30] उपरोक्त वर्णन के आधार पर निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि महर्षि अत्रि व उनकी पतिव्रता पत्नी अनसूया लोक हित हेतु कार्य करने में अग्रसर रहते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ससर्ज सृष्टि तद्रूपां स्त्रष्टुमिच्छन् प्रजापतीन्।
   मरीचिमत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम।। ब्रह्मपुराण, 1.43
2. पिता सोमस्य भो विप्रा जज्ञेऽत्रिर्भगवानृषिः।
   ब्रह्माणो मानसात्पूर्व्वं प्रजासर्गं विधित्सतः।। वही, 9.1
3. अत्रिराराधयामास ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्।
   तेषु तुष्टेषु स प्राह पुत्रायूयं भविष्यथ।।
   तथा चैका रूपवती कन्या मम भवेत्सुराः।
   तथा पुत्रत्वमापुस्ते ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ।। वही, 114.2–3
4. आदिष्टोब्रह्माणपूर्वमत्रिः सर्गविधौपुरा।
   अनंतरंनामतपः सृष्टयर्थंतप्तवान्विभु।। पद्म पुराण, प्रथम खण्ड, पृष्ठ संख्या 92, श्लोक–2
5. अथान्यान्मानसान्पुत्रान्सदृशानात्मनोऽसृजत्।
   भृगुं पुलस्त्यं पुलहं ऋतुमङ्गिरसं तथा।
   मरीचिं दक्षमत्रिं च वसिष्ठं चैव मानसान्।। विष्णु पुराण, 7.4–5
6. ख्यातिः सत्यथ संभूतिः स्मृति प्रीतिः क्षमा तथा।
   सन्नतिश्चानसूया व ऊर्जा स्वाहा स्वधा तथा।।
   भृगुर्भवो मरीचिश्च तथा चैवागिंरा मुनि।
   पुलस्त्यः पुलहश्चैव ऋतुश्चर्षिवरस्तथा।।
   अत्रिर्वसिष्ठो वह्निश्च पितरश्च यथाक्रमम्।

ख्यात्याद्या जगृहुः कन्या मनुयो मुनि सत्तम्।। वही, 7.25–27

7. अनसूया तथैवात्रेर्जज्ञे निष्कल्मषान् सुतान्।
सोमं दुर्वाससं दत्तात्रेयं च योगिनम् ।। वही, 1.10.9
8. शिवपुराण, प्रथम खण्ड, पृष्ठ, 480–484, श्लोक 22–28
9. या कद्रमसुता प्रोक्ता नव ब्रह्मार्षिपत्न्यः।
तासा प्रसूतिप्रसवं प्रोच्यमानं निबोध मे। श्रीमद्भागवत्, 4.12
10. तासां प्रसूति प्रसंव प्रोच्यमानं निबोध मे....
सोमोऽभूद्ब्रह्मणोंऽशेन दत्तो विष्णेस्तु योगवित्। दुर्वासाः शंकरस्यांशो निबोधाङ्गिरसः प्रजाः।
श्रीमद्भागवत् पुराण,चतुर्थ स्कन्ध, 1.12–33
11. श्रीमार्कण्डेय महापुराणम्, 16.14–103
12. रामोवसिष्ठं मातृश्च नत्वात्रिं च प्रणम्य सः
अनसूयां च तत्पत्नीं शरभङ्ग सुतीक्ष्णकम्।।
अगस्त्य भ्रातरं नत्वा अगस्त्यं तत्प्रसादतः।
धनुः खड्गं च सम्प्रदाप्य दण्डकारण्यमागतः।। अग्निपुराण, 7.1–2
13. सोमवंश प्रवक्ष्यामि पठितं पापनाशनम्।
विष्णुनाभ्यञ्च जो ब्रह्मा ब्रह्मपुत्रोऽत्रिरत्रितः।। वही, 274.1
14. भुगुरत्रिर्वसिष्ठश्च पुलस्त्य पुलहः ऋतुः
पराशरस्तथा व्यासः सुमन्तुजैमिनिस्तथा।। भविष्यपुराण, प्रथम ब्रह्मपर्व, 1.3
15. पुलस्त्यों दक्षकर्णाच्च पुलहो वामकणतः।
दक्षनेत्रात्तथाऽत्रिश्च वामनेत्रात् क्रतुः स्वयम्। ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म खण्ड, 7.24
16. तयोर्भक्ति समायस्यतेनवालोऽत्रिरुच्यते।।
जटावह्निशिरवारूपाः पञ्चसन्ति च मस्तके।। वही, 8.16
17. प्रसूतिः सुषुवे दक्षाच्चतुर्विंशतिकन्यकाः।
श्रदां लक्ष्मीं धृतिं पुष्टि तुष्टि मेधां क्रियां तथा।
बुद्धिं लज्जां वपुः शांति सिद्धिं कीर्तिं महातपाः।
ख्याति शांति च संभूति स्मृतिं प्रीतिं क्षमां तथा।।
सन्नति चानसूयां च ऊर्जा स्वाहा सुरारणिम्।
स्वधां चैव महाभागां प्रददौ च यथाक्रमम्।। लिंग पुराण, प्रथम खण्ड, श्लोक 20–22
18. श्रद्धाद्याश्चचैव कीर्त्यंतास्त्रयोदश सुदारिकाः।
धर्मं प्रजापति जग्मु : पतिं परमदुर्लभाः। वही, प्रथम खण्ड, श्लोक, 23
19. उपयेमे भृगुर्धीमान् ख्याति तां भार्गवारगिम्.....
क्रतुश्व सन्नति धीमानत्रिस्तां चानसूयकाम् वारिजैक्षणम्।। वही, 24–25
20. अत्रेर्भार्यानसूया वे सुषुवे षट्प्रजास्तु याः।
तास्वेका कन्यका नाम्ना श्रुतिः सा सूनुपंचकम्।।
सत्यनेत्रो मुनिर्भव्यो मूर्तिशपः शनश्चरः।
सोमश्च वै श्रुतिः षष्ठी पंचात्रेयास्तु सूनवः।। वही, श्लोक, 46–47
21. क्रतवे संनर्ति नाम अनसूयां तथात्रये।
ऊर्जां ददौ वसिष्ठाय स्वाहामप्यग्नये ददौ। वही, श्लोक, 291

22. ब्रह्मणो मानसः पुत्रो ह्यत्रिर्नाम महायशाः।
तस्य पुत्रोऽभवत्सोमो दक्ष जमामृताङ्गत।। वराहपुराण, प्रथम खण्ड, श्लोक 1
23. ऋषयोविविधास्तत्रवशिष्ठाद्याः समागताः।
अगस्त्यः कश्यपोऽत्रिश्चावामदेवस्तथाभृगु।। स्कन्दपुराण, द्वितीय खण्ड, श्लोक–2
24. अरुन्धत्याऽनुसहितं वसिष्ठं शंसितव्रतम्।
सहाऽनसूययाऽत्रिं च सह घृत्या च कौशिकम्।।
अहल्यया गौतमं च भरद्वाजममायया।
चन्द्रया सहित ब्रह्मन्नृषिमङ्गिरस तथा।।
आमन्त्र्य कृतवान्दक्षः सदस्यान्यज्ञकर्माणि।
सदस्यान्गुणसंपन्नान्वेदवेदाङ्ग पारवान्।। वामनपुराण, नरोत्पत्तिप्रलयकथनम् अध्याय, 2.9–11
25. सन्ततिंश्चानसूया व ऊर्जां स्वाहा स्वधा तथा।
भृगुर्भवोमरीचिश्च तथा चैवाङ्गिरा मुनिः।
पुलस्त्यः पुलहश्चैव क्रतुः परमधर्मवित्।
अत्रिर्वसिष्ठों वह्निश्च पितरश्च यथाक्रमम्।। कूर्मपुराण, पूर्वार्द्धम् 8.18–19
26. मरीचिरभवत्पूर्वततोऽत्रिर्भगवान् ऋषिः।
अङ्गिराश्चाभवत्पश्चात् पुलस्तयस्तदनन्तरम्।। मत्स्यपुराण, प्रथम खण्ड, श्लोक 6
27. पत्न्यर्थं प्रतिजग्राह धर्मो दाक्षायणी प्रभुः।
ख्यातिः सत्यथ सम्भूतिः स्मृतिः प्रीतिः क्षमा तथा।।
सन्नतिश्चानसूया च ऊर्जा स्वाहा स्वधा तथा।
भृगुर्भवो मरीचिश्च तथा चैवांगिरा मुनिः।।
पुलस्त्यः पुलहश्चैव ऋतुश्चर्षिवरस्तथा।
अत्रिर्वसिष्ठो वह्निश्च पितरश्च यथाक्रमम्।। गरुड पुराण, पूर्व खण्ड, आचारकाण्ड 5.28–30
28. उतानपादं जग्राह पुत्रमत्रिः प्रजापितः।
दत्तक स तु पुत्रो राजा ह्ययासीत् प्रजापतिः।
स्वायम्भुवेन मनुना दत्तोऽत्रेः कारणं प्रति।। ब्रह्माण्ड पुराण, 1.2.36.84–85
29. अत्रेंर्वश प्रवक्ष्यामि तृतीयस्य प्रजापते।
तस्य पत्न्यस्तु सुन्दर्यो दशैवासन्पतिव्रता।। वही, उपोद्घातपाद, 1.8.73–74
30. यामदेवैस्सहातीताः पंचात्रेयाः प्रकीर्तितां वही, 1.2.10.24